# पाठ 16. फूल हमेशा मुसकाता

## पाठ की भूमिका

इस पाठ का उद्देश्य बच्चों में अंतर-वैयक्तिक संबंध का कौशल विकसित करना है ताकि वे विभिन्न व्यक्तियों व प्राणियों से सकारात्मक तरीके से जुड़ने की समझ पैदा कर सकें। जीवन में कितनी भी मुसीबतें आएँ, हमें कभी भी घबराना नहीं चाहिए। पुष्प के माध्यम से सोहनलाल द्विवेदी जी ने ज़िंदगी जीने का तरीका प्रस्तुत किया है।

## पाठ का सार

कवि इस कविता में फूल के स्वभाव व गुणों का बखान कर रहे हैं। लू के थपेड़े सहकर, काँटों की नोकों को सहकर, विपरीत परिस्थितियों में भी फूल हमेशा मुसकराता रहता है। चाहे डाली के ऊपर हो या नीचे गिरकर धूल में मिल जाए, फूल कभी भी अपनी खुशबू नहीं छोड़ता। हर मौसम का सामना वह मज़बूती से करता है तथा कभी नहीं रोता। वह हमेशा मुसकराता रहता है। फूल का उदाहरण देकर कवि मानव जगत को प्रसन्न रहने तथा मुसकराने की प्रेरणा दे रहे हैं।

## अध्यापन संकेत

- **मूल पाठ के लिए संकेत**

  कविता का मौन और मुखर वाचन करवाएँ। फूल से संबंधित यह कविता हमें क्या प्रेरणा देती है, यह बच्चों को बतलाएँ। बचपन से ही वे सुख-दुख बाँटने और विपरीत परिस्थितियों को चुनौती के रूप में स्वीकार करना सीखें, इस बात पर ज़ोर दें।

- **अभ्यास प्रश्नों के लिए संकेत**
  - **मौखिक प्रश्नों, पहेलियों, पठित परिच्छेद** व **पाठ आधारित प्रश्नों** के अध्यापन संकेत हेतु **पृष्ठ संख्या 42** देखें।
  - विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं। ये संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, कुछ अन्य उदाहरण देकर समझाएँ।
  - 'कर' शब्दांश क्रिया के साथ जोड़कर लिखा जाता है, इसकी जानकारी दें।
- **क्रियाकलाप के लिए संकेत**
  - 'प्रसन्न रहने के उपाय'–इस विषय पर कक्षा में चर्चा आयोजित की जा सकती है।